© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

रीतिकालीन दरबारी कवि – कवि ग्वाल

सारिका सक्सेना

M5/104 अल्फा कॉर्प, मेरठ वन कॉलोनी, मोदीपुरम बाईपास मेरठ, उत्तर प्रदेश

रीतिकालीन हिन्दी साहित्य के इतिहास का अनुशीलन करते समय विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में कवि ग्वाल एक ऐसे कवि के रूप में प्राप्त हुए जिन्होंने श्रृंगार रस के साथ ही वीर रस में भी काव्य का सृजन किया। कवित्व एवं आचार्यत्व का सम्यक निर्वाह करने वाले रीतिकालीन अन्तिम चरण के सर्वांग निरूपक कवियों में ग्वाल का स्थान अन्यतम कहा जा सकता है। हिन्द साहित्य जगत में कवि ग्वाल का विशेष महत्व है। हिन्दी साहित्य में कवि ग्वाल रीतिकालीन आचार्य कवि–परम्परा के अन्तिम प्रतिष्ठित आचार्य कवि माने जाते है। यद्यपि इनके पश्चात् अनेकों कवि हुए किन्तु वे अस्तंगत होती रीति परम्परा को पुनरूज्जीवत नहीं कर सके। वस्तुतः ग्वाल ऐसे समय में हुए जब रीतिकालीन आचार्य कवि परम्परा का सूर्य अस्ताचल की ओर था, यह वह समय था जहॉ से रीतिकाव्यधारा निरन्तर अवसान की ओर उन्मुख थी किन्तु कवि ग्वाल ने रीति काव्य गंगा को एक सशक्त सीढ़ी प्रदान की, जहॉ से वह अधोमुखी होती चली गयी।

मुख्य शब्द – रीतिकालीन, अनुशीलन, पुनरूज्जीवत, अधोमुखी, मध्यकालीन, जीवनवृत्त

कवि ग्वाल का व्यक्तित्व रीतिकालीन दरबारी कवि का प्रतिनिधि व्यक्तित्व माना जा सकता है, जो शानो–शौकत से युक्त विलासिता पूर्ण जीवन जीता है और मनोरंजन तथा जीविका हेतु काव्य सृजन करता है। प्रेत्यक कवि जो काव्य सृजन करता है वह स्व को अपने काव्य से बिल्कुल अलग रखकर नहीं चल सकता, किन्तु कवि ग्वाल का अनुशीलन करने पर व्यक्तित्व की एक तस्वीर सामने आती है। मध्यकालीन अन्य कवियों की भॉति ही ग्वाल के जन्म समय के विषय में भी पर्याप्त मतभेद रहे है। ग्वाल जैसे महत्वपूर्ण कवि के जीवनवृत्त एवं कृतित्व की प्रमाणिक सूचना भी उस युग के अन्य कवियों के समान ही अनुपलब्ध है। वस्तुतः जब तक किसी कवि की रचनाओं का सम्यक् सम्पादन एवं प्रकाशन नहीं हो जाता तब तक उसका प्रामाणिक व्यक्तित्व और कृतित्व भ्रामक बना रहता है।

कवि ग्वाल का जन्म विक्रम संवत्1884 में हुआ अथवा संवत् 1859 में यह विवादास्पद है। पण्डित नवनीत चतुर्वेदी उनकी जन्मतिथि मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया, संवत् 1848 स्वीकारते है तो मीनाई साहब जो रामपुर रियासत से चालीस वर्ष सम्बद्ध रहे और कवि ग्वाल के अभिन्न मित्र थे वे उनका जन्म संवत 1859 में

मानते है। कवि ग्वाल ने रसिकानन्द नामक ग्रन्थ में 21 दोहों में अपने वंश, कुलपरम्परा एवं पूर्वजों का इतिहास वर्णित किया है। कवि जाति से बड़ाभट्ट थे। ये राय या राव अल्ल का प्रयोग करते थे।

रीतिकालीन काव्यपरम्परा राजाओं के आश्रय में ही पुष्पित एवं पल्लवित हुई। तत्कालीन अधिसंख्यक कवि, राजा या सांमतों के अधीन थे। राज्याश्रय में काव्य सृजन करने वाले कवियों को यथोचित धन, पद, प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होती थी। कवि ग्वाल के समय के अधिकांश कवियों की भी यही स्थिति थी और ग्वाल भी इसके अपवाद नहीं थे। ग्वाल जीविकोपार्जन हेतु देशाटन करते हुए सर्वप्रथम पंजाब की नाभा रियासत के अधिपति महाराज जसवंत सिहं के दरबार में पहुॅचे। जसवन्त सिहं जो कि स्वंय काव्यप्रेमी थे, ने प्रीतिपूर्वक कवि ग्वाल को अपने दरबार में रख लिया। ग्वाल ने नाभानरेश की आज्ञा से संवत्1879 में रसिकानन्द नामक ग्रन्थ की रचना की। कवि ग्वाल नाभा में कब तक रहे इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। नाभा निवास के पश्चात् उनका सम्बन्ध अमृतसर के सरदार देशराज सिहं से हुआ यही अमृतसर में रहकर ही कवि ग्वाल ने संवत् 1883 में हम्मीरहठ तथा संवत् 1891 में कविदर्पण की रचना की। इसके बाद वे लाहौर आ गये, कवि ग्वाल ने यही पर विजयविनोद की रचना लाहौर के महाराज शेरसिहं के समय में की, कुछ समय पश्चात् वे पुनः नाभा में महाराजा देवेन्द्र सिहं के पुत्र महाराज भरपूर सिहं के आश्रित रहे और यहीं कवि ग्वाल ने गुरूपचासा मौलिक काव्य तथा मीरहसन की प्रसिद्ध मसनवी कृति सिहरउलबयाना का इश्कलहरदरयाब नाम से संवत 1917 में काव्यानुवाद प्रस्तुत किया।

कवि ग्वाल ने लाहौर से चलकर पंजाब की सुकैत मंडी में डेरा डाला तथा वहॉ के शासक बलवीर दयाल की आज्ञा से बलवीरविनोद ग्रन्थ की रचना की। एक बार वे टोंक राज्य में भी गये थे वे टोंक के नवाब के लिए उन्होंने खड़ी बोली में कृष्णाष्टक बनाकर सुनाया, कवि ग्वाल को देशाटन का बहुत शौक था। तदनन्तर कबि वापस मथुरा आ गये और संवत् 1919 में उन्होंने दृगशतक की रचना की तथा भक्तभावन का सम्पादन किया। कवि ग्वाल का अन्तिम जीवन रामपुर दरबार में व्यतीत हुआ, वहॉ इमदादुल्ला खॉ के आमंत्रण पर कवि पुनः रामपुर आये और उन्होंने अन्तिम श्वास भाद्रपद शुक्ल एकादशी संवत् 1924 अर्थात् 10 सितम्बर सन् 1867 में रामपुर की सरजमीं पर ही ली।

कवि ग्वाल का कृतित्व

कवि ग्वाल का कृतित्व भी उनके जीवनवृत्त के समान ही पर्याप्त विवादयुक्त है। इसका मुख्य कारण उनके काव्य का व्यवस्थित सम्पादन न हो पाने के कारण उनके ग्रन्थों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही, किसी भी कवि की काव्यकृतियों कें सम्यक् समीक्षण, सम्पादन तथा ग्रन्थावली के प्रकाशन के अभाव ने इस समस्या को और अधिक विकराल बना दिया। जिसकारण भी कवि ग्वाल के साहित्य के विषय में भ्रान्तियॉ बढ़ती रहीं।

कवि ग्वाल के नाम पर कविहृदयविनोद, लक्षणा व्यंजना, रसरूप, शेरसिहंविनोद, राधामाधवमिलन, दूषणदर्पण, साहित्यदर्पण, साहित्यदूषण, काव्यदूषण कवित्व सग्रंह श्रृंगार दोहा, आदि ग्रन्थों का नामोल्लेख किया जाता है। कविहृदयविनोद का संकलन एवं संपादन मुंशी हरप्रसाद द्धारा किया गया और यह सन् 1888 में मथुरा से प्रकाशित हुआ इसके 238 छन्दों में 211 छन्द कवि ग्वाल के थे इससे स्पष्ट प्रतीत

होता है कि कवि ग्वाल का छन्द शास्त्र पर पूर्ण अधिकार था। कुछ प्रमुख प्रामाणिक ग्रन्थ जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कवि ग्वाल से सम्बन्धित रहे वे निम्न प्रकार है–

1. निम्बार्क स्वाम्याष्टक–

आठ कवियों वाली इस लघुकाव्य रचना में कवि ग्वाल ने स्वामी निम्बार्काचार्य का वंशीगान किया है। इस रचना का रचना काल अभी तक अज्ञात है किन्तु भाषा, भाव एवं शिल्प की दृष्टि से यह कवि की प्रथम कृति दिखलाई देती है। राज्याश्रय प्राप्त करने से पूर्व, कवि के वृन्दावन निवास के समय ही इसकी रचना हुई होगी। साहित्यिक दृष्टिकोण से इस कृति का महत्व शून्य है लेकिन ऐतिहासिक रूप से यह महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्वाल का प्रारम्भिक सम्बन्ध निम्बार्क सम्प्रदाय से रहा है।

2. नेह निवाह–

यह मात्र 32 छन्दों वाली लघुकाय रचना है, जिसमें 7 दोहें, 14 सवैये और11 कवित्त हैं। यह कृति ठाकुर, बोधा, आदि रीतिमुक्त कवियों की विशुद्ध प्रेम की परिपाटी पर रची गयी है लेकिन इसमें न तो उनके जैसी स्पष्टवादिता दिखती है और न ही प्रेममार्ग की विकरालता ही व्यक्त हो पायी है। यह कृति प्रेम की विलक्षणता का प्रतिपादन करने वाली रचना है। प्रेम क्या है, कहॉ से उत्पन्न होता है इसका क्या स्वरूप है इत्यादि प्रश्नों के उत्तरस्वरूप इस कृति का सृजन हुआ। इसकी रचना भी मथुरा में ही हुई ऐसा उल्लेख मिलता है।

3. रसिकानन्द–

रसिकानन्द की रचना को नाभा नरेश जसवन्त सिहं जी की आज्ञा से हुई। इस कृति का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि यह रीति परम्परा पर कवि ग्वाल का प्रथम प्रयास है। बारह प्रकरणों में विभक्त इस कृति में 924 छन्द है जिसमें 563 दोहे, 344 कवित्त, 14 सवैया, 1 अमृत ध्वनि और 1 सोरठा है। रसिकानन्द के महत्व के विषय में कवि ग्वाल लिखते है–

कूर उलूकन की कहीं, दीखे नहीं अनंद।
मान भयो जग मान सम, ग्रंथ सुरसिकानन्द।।

जो चरिचा करि कवित में, बन्यौ चहत है चंद।
तौ चित दै कवि ग्वाल कौ, पढै सु रसिकानन्द।।

ग्वाल का यह प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है जिसके फलस्वरूप कुछ अपरिपक्वताएं भी दृष्टिगोचर होती है। उदाहरणार्थ कामशास्त्रीय सामग्री आवश्यकता से अधिक है, विषय विभाजन भी पूर्ण रूपेण वैज्ञानिक नहीं है और यत्रतत्र परिभाषाएं भी अस्पष्ट है, किन्तु कुल मिलाकर ग्रन्थ महत्वपूर्ण है।

4. हम्मीरहठ–

हम्मीरहठ कवि ग्वाल का वीररस का कथाकाव्य है, जिसकी रचना कार्तिकी अमावस्या को अमृतसर में हुई थी। 240 छन्दों के इस लघुकाय ग्रन्थ में रणथम्भौर के प्रणवीर एवं साहसी नरेश महाराज हम्मीरदेव और दिल्ली के प्रतापी सुल्तान अलाउद्दीन के युद्ध का वर्णन है। जिसमें हम्मीरदेव

अत्यन्त पराकम से युद्ध करने और उसमें विजयी होने के बाद जब सुल्तान के किले में प्रवेश करते है तो वहॉ का हृदयविदारक दृश्य देखकर उसे वैराग्य हो जाता है और वह राज्य अपने पुत्र का सौंपकर अपना सिर भगवान शिव को समर्पित कर देता है। हम्मीर के आत्मबलिदान के साथ ही ग्रन्थ का समापन होता है। राजस्थान के प्रणवीर नरेशों में हम्मीरदेव का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। हम्मीर देव की प्रतिज्ञा पालन का वर्ण कवि ग्वाल इस प्रकार करते है–

अतल वितल फिर सुतल तलातल हूँ,
बुहरि महातल रसातल पताल लौ।
सातों लोक नीचे के उलटि आवैं उपर को,
तौउ में न त्योगौं निज धर्म अंत काल लौ।।
छत्री के जनम क्यों अछत्री के गहौं मैं कर्म,
आयौं जो सरन ताहि राखौं प्रन भाल लौं।
टारौं नहिं बोल मैं हम्मीर देव मंत्री सुन,
मारूँ फौज साह की सहज ही के ख्याल लौं।।हम्मीरहठ छन्द 62

5. कवि दर्पण–

काव्यदोंषों का विवेचन करने वाला यह ग्रन्थ दूषणदर्पण, साहित्यदूषण, साहित्यदर्पण आदि अनेक नामों से प्राप्त होता है। इसके विषय में प्रभुदयाल जी मीतल का मत दर्शनीय है उनके शब्दों में– इस ग्रन्थ में ग्वाल ने प्रायः सभी बड़े बड़े हिन्दी कवियों के काव्य में दोष ढूंढ निकाले है, जिसके कारण वे अपने समय के अनेक कवियो के कोप और निन्दा के पात्र बनकर रह गये थे, उनके विरोधी कविदर्पण के मत का खण्डन न करके इसे दूषणदर्पण कहकर इनका उपहास किया करते थे और इस ग्रन्थ की रचना के लिए कवि ग्वाल को गाली दिया करते थे। इस ग्रन्थ को पूराकर के कवि ग्वाल ने देशराज सिहं मंजीठिया के पुत्र सरदार जहनासिहं को समर्पित कर दिया। इस ग्रन्थ में 489 छन्द है। इस ग्रन्थ में कवि ग्वाल ने अपना दृष्टिकोण पूर्णतः शास्त्रीय रखा और यह ग्रन्थ तत्कालीन आलोचना का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करता है।

6. विजयविनोद–

विजयविनोद की रचना संवत् 1901 में राजा हीरा सिहं की इच्छा और कश्मीर पण्डित जल्हा के आदेश से की गयी थी। इस ग्रन्थ में 487 छन्द है जिसमें काव्यतत्व की तुलना में घटित इतिहासतत्व अधिक महत्वपर्ण है। ग्रन्थ का महत्व ऐतिहासिक ही अधिक है यह ग्रन्थ गुरूमुखी में भी प्रकाशित हुआ था बाद में इसका अनुवाद ब्रजभाषा में हुआ था।

7. रसरंग–

रसरंग सर्वरसनिरूपक कृति है। इसका रचनाकाल संवत् 1904 है। प्रभुदयाल मीतल ने इसे ग्वालकृत उपलब्ध रीतिग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ कहा है तो डॉ.भगवान सहाय पचौरी इसे प्रौढ़लक्षणरचना मानते है। इसमें 811 छन्दों का वर्णन किया गया है जिसमें कवि ग्वाल ने श्रृंगार रस का विशद्

विवेचन किया है, शेष सभी रसों का अन्तिम उंमग में सूक्ष्म विवेचन से चलता कर दिया है। ग्रन्थ के अन्त में गंगा, यमुना, त्रिवेणी तथा राधा आदि से सम्बन्धित भक्तिपरक छन्द रखे गये है।

8. साहित्यानन्द–

साहित्यानन्द ग्वाल कवि का सर्वांगनिरूपक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को उनकी प्रौढतम शास्त्रीय कृति कहा जा सकता है। इसमें कवि ग्वाल का प्रगाढ़ पाण्डित्य का परिचय मिलता है। कवि ने संस्कृत और हिन्दी भाषा के प्रमुख ग्रन्थों का गूढ़ अध्ययन और मनन किया था। कलेवर की दृष्टि से यह रीतिकालीन सर्वांग–विवेचक ग्रन्थों में विशालतम है। यह ग्रन्थ अत्यन्त विशाल है, इसके लिए कवि ग्वाल ने सस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का विस्तृत विवेचन किया है और समझाने के लिए सुदीर्घ गद्यवार्ताएं दी है, किन्तु यह ग्रन्थ अद्यावधि पूर्णरूप में उपलब्ध नहीं है।

9. गुरूपचासा–

कवि ग्वाल की इस कृति में 57 छन्दों का उल्लेख मिलता है इसकी रचना कवि ग्वाल ने नाभा नरेश भरपूर सिहं के आश्रयकाल में संवत् 1917 में की थी। प्रथम गुरू नानकदेव पर 5 तथा अन्तिम गुरू गोविन्द सिहं पर 29 छन्द लिखे गये है शेष सभी गुरूओं में विषय में छन्द संख्या दो या तीन ही रहीं है। कवि ग्वाल की यह कृति काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से अवलोकित करने पर सामान्य स्तर की ही कही जा सकती है।

10. भक्तभावन–

इसे कवि का स्वतन्त्र ग्रन्थ न कहकर उनकी भक्तिपरक रचनाओं का सग्रंह कहा जाये तो अधिक उपयुक्त होगा। इसमें कवि ने यमुना जी के महात्म्य का बड़ा ही सरस चित्रण किया गया है। यमुना की पावनता, नाम, महिमा, यश, कीर्ति, दर्शन–फल पापनाशिनी आदि महात्म्यों का वर्णन करने के साथ ही उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक एवं नैतिकपक्षों का भी बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है। यह ग्रन्थ संवत् 1903 में प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ को देखकर यह भी जानपढ़ता है है इसका संकलन पूर्ववर्ती सामग्री से ही किया गया है।

उक्त के अतिरिक्त भी कवि ग्वाल की प्रमुख कृतियों में बलवीरविनोद, विप्रकीर्ण, प्रस्तारप्रकाश, इश्कलहरदरयाब, बंशीबीसा, भक्तभावन है। कवि ग्वाल रचित काव्यों की ओर पहले भले ही समीक्षकों का ध्यान न गया हो किन्तु वर्तमान समय में कवि ग्वाल के उक्त वर्णित कई ग्रन्थ संपादित एवं प्रकाशित हो चुके है, साथ ही कवि ग्वाल के ग्रन्थों पर शोधकार्य भी हो रहे है। विगत कुछ समय से कवि ग्वाल के काव्य के प्रति सम्पादन एवं प्रकाशन का रूझान भी बढ़ा है। सारांश में यह कहा जा सकता है कि कवि ग्वाल सरस और सरल काव्यसृतन में सिद्धहस्त थे, उन्होंने आचार्यत्व एवं कवित्व दोनों ही दृष्टि से विपुल साहित्य सृजन किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	कविदर्पण	:	डॉ. किशोरी लाल
2.	रीतिकाल के कवि	:	डॉ. रामानन्द शर्मा
3.	रीतिश्रृंगार मंजूषा	:	डॉ. किशोरी लाल
4.	कवि ग्वाल–एक परिचय	:	डॉ. पायल महरोत्रा
5.	पिंगल प्रकाश	:	रघुवरदयाल मिश्र
6.	ब्रजभाषा साहित्य	:	प्रमुदयाल मीतल
7.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	:	रामचन्द्र शुक्ल
8.	नालन्दा विशाल शब्दसागरः	:	नवल जी
9.	हिन्दी साहित्य की अतीत	:	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
10.	महाकवि ग्वाल स्मृति ग्रन्थ	:	डॉ. भगवान सहाय पचौरी